प्रवासी हिंदी साहित्य और पत्रकारिता : अंतर्संबंध

सविता शं. कोल्हे
पीएच.डी, शोधार्थी
हिंदी अनुसंधान केंद्र
म.स.गा.महाविद्यालय, मालेगांव (नाशिक)
(सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे)
संपर्क – 8329428076
ई–मेल – sk.kolhe27@gmail.com

प्रो. डॉ. अनिता नेरे
विभागाध्यक्ष
महिलारत्न पुष्पाताई हीरे महिला महाविद्यालय,
मालेगांव कैम्प, जि. नासिक
संपर्क – 9404556342
ई–मेल – anitanere321@gmail.com

भूमिका :–

साहित्य की कड़ी में प्रवासी हिंदी साहित्य यह एक अध्याय जुड़ गया है. हालांकि इसकी शुरुआत 19 वीं सदी से मानी जाती है और इस बात के प्रमाण पत्रिकाओं में लिखित कथा–कहानियों से मिलते है । प्रेमचंद की 'यही मेरी मातृभूमि' (1908) तथा शूद्रा (1926) (चाँद पत्रिका) से प्रवासी साहित्य का आरम्भ माना जाता है । पत्रिकाओं में इन कहानियों का प्रस्तुतीकरण यानि प्रवासी साहित्य का जन्म है । इसलिए यह कहना बिलकुल भी गलत नहीं होगा की प्रवासी साहित्य और पत्रकारिता का संबध सदियों से चला आ रहा है । जब प्रवासी साहित्य की अवधारणा प्रकट भी नहीं हुई थी, तभी से पत्रकारिता ने ही इसे दुनिया के समक्ष लाने का काम किया है । वर्तमान में इसका स्वरूप अब विस्तार लें चूका है । इंटरनेट के मायाजाल ने पत्रकारिता और प्रवासी साहित्य दोनों को एक ही मंच पर लाने का बहुत तेजी से काम किया है ।

शुरूआती दौर में जब पत्रिकाओं के प्रकाशन का दौर बहुत काम था या कहें की न के बराबर था तब से ही पत्रकारिता ने प्रवासी भारतीयों की रचनाओं को समाचार–पत्रों में, पत्रिकाओं में प्रकाशन का अवसर प्रदान किया है । प्रवासी भारतीयों पर आधारित पत्र–पत्रिकाओं में कहानी–कथा, समाचार

प्रकशित होने लगे, तभी से यह दुनिया के समक्ष आने लगा और इसकी शुरुआत की लहरें तरंगती हुए अपने जड़ों को मजबूत करने में जुट गई । प्रवासी भारतीयों की स्थिति को सुधारने, उनके विचारों की प्रस्तुति के लिए या कहें उन्हें व्यक्त होने के लिए पत्रकारिता ने एक मंच के रूप में काम किया है । चूंकि पत्रकारिता ही एक ऐसा माध्यम था, जिसकी ताकद से कठिन परिस्थितियों से लड़ना संभव था । पत्रकारिता के माध्यम से ही दूसरे देशों में गए प्रवासी भारतीयों की स्थिति पर भारत में चर्चा होना संभव हुआ ।

इसी ताकद को पहचानकर फिजी, सूरीनाम, अमेरिका, इग्लैंड, मॉरिशस, मलेशिया, त्रिनिदाद आदि देशों में समाचार–पत्र एवं पत्रिकाओं के प्रकाशन का दौर शुरू हुआ । समाचार–पत्रों में प्रवासी भारतीयों पर आधारित खबरों का प्रकाशन का सिलसिला चला, वहीं पत्रिकाओं में प्रवासी भारतीयों की रचनाओं के प्रकाशन होने लगा । जिससे प्रवासी साहित्य की अवतारणा हुई और प्रवासी साहित्य यह विधा हिंदी साहित्य से जुड़ गया । वर्तमान में इसकी जडे अब मजबूत हुई है । भारत में प्रवासी भारतीयों पर आधारित विभिन्न रचनाओं के प्रकाशन के लिए विभिन्न पत्रिकाएँ निकल रहीं है । साथ ही विशेष स्थिति में विशेषांकों का भी प्रकाशन हो रहा है ।

विभिन्न देशों में पत्र–पत्रिकाएं और प्रवासी साहित्य

दक्षिण अफ्रीका में रहते महात्मा गाँधी ने प्रवासी भारतीयों की दयनीय अवस्था को देखते हुए और उनकी समस्याओं को हल करने तथा इस उपाययोजन के लिए या कहें इसे दुनिया के समक्ष लाने के लिए 'इन्डियन ओपिनियन' समाचार पत्र की शुरुआत की । इस समाचार पत्र का पहला अंक 4 जून, 1903 (पहले अंक पर यहीं तारीख है, पर बाजार में 6 जून, 1903 को पहुंचा ।) को निकला । 'इन्डियन ओपिनियन' में पूरी तरह से प्रवासी भारतीयों के हितों के लिए था उसमें उनकी दुर्दशा के प्रसंग थे, प्रतिकूल कानूनों की व्याख्या तथा विरोध था, प्रवासी भारतीयों की एकता तथा जागृति का सन्देश तथा उनके देश प्रेम की प्रशंसा थी ।"[1]

मॉरिशस में डॉक्टर मणिलाल 11 अक्टूबर, 1907 को आये । यहाँ आने के बाद उन्होंने प्रवासी भारतीयों के लिए कार्य करना प्रारंभ किया । प्रवासी भारतीयों के लिए उन्होंने 'हिंदुस्थानी' नामक पत्र का प्रकाशन 15 मार्च, 1909 से शुरू किया । इस पत्र के प्रथम पृष्ठ पर आदर्श वाक्य था, 'व्यक्ति की स्वतंत्रता ! मनुष्य का भाईचारा !! जातियों की समानता !!!' ।"[2] शुरुआत में इसका प्रकाशन अंग्रेजी–

गुजराती में होने लगा, बाद में यह अंग्रेजी–हिंदी में निकलना शुरू हुआ । इसका उद्देश्य भारतीय प्रजा में स्वाभिमान और आत्मविश्वास पैदा करना और उनके जीवन में तथा उनके विचारों में परिवर्तन एवं उनकी स्वतत्वों की रक्षा करना था । उसके बाद यहाँ पर१ 1 जून 1911 से 'आर्य पत्रिका' का निकलना शुरू हुआ ।"[3] पत्रिका में प्रवासी भारतीयों की रचनाएं प्रकशित होने लगी ।

इसके बाद 6 सितंबर, 1920 से 'मॉरिशस इन्डियन टाइम्स' दैनिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । यह द्विभाषी दैनिक था यह भारतवंशियों के लिए दूसरा समाचार–पत्र था । यह राजनितिक पत्र था, यह अंग्रेजी–फ्रेंच और हिंदी में निकलता था ।"[4] मॉरिशस मित्र, आर्यवीर पत्रिका आदि पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन का सिलसिला जारी रहा । इसके अलावा मॉरिशस में विश्व हिंदी सचिवालय से वर्ष 2008 से नियमित रूप से विश्व हिंदी समाचार यह एक त्रैमासिक पत्रिका निकलती है । इसमें विश्व के कोने–कोने से हिंदी प्रेमियों की रचनाएं होती है । विश्वभर के प्रवासी साहित्यकारों समेत हिंदी प्रेमियों की रचनाओं का इसमें स्थान दिया जाता ही । इस पत्रिका की विशेषता यह की, यह सिर्फ समाचार तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें हिंदी से जुड़े ज्वलंत मुद्दों पर आलेख भी होते है तथा विभिन्न मुद्दों एवं विषयो पर चर्चाएँ भी होती है । इसके अलावा विश्व हिंदी सचिवालय से 'विश्व हिंदी पत्रिका विशेषांक' का भी प्रकाशन होता है और यह वार्षिक है ।

प्रवासी साहित्य के विकास में इग्लैंड में अनेकों लेखकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । यहाँ कविता, कहानी, नाटक तथा उपन्यास जैसे कई विधाओं में लिखा गया है । वर्ष 1951 में हरिवंश राय बच्चन के इग्लैंड में अध्ययन के लिए आने के समय सर्वप्रथम 'हिंदी परिषद् की स्थापना से प्रवासी भारतीयों के मन में अपनी भाषा, धर्म और संस्कृति के प्रति आकर्षण उत्पन्न हुआ और वहां नाटकों का मंचन हुआ तथा हिंदी में तीन पत्रिकाएँ प्रकाशित की गई थीं ।[5] इसी प्रेरणा से कई हिंदी समितियों की स्थापना यहाँ पर हुई । इसकी प्रेरणा से परिणामस्वरूप अब यहाँ से 'पुरवाई', 'प्रवासी टुडे', 'लन्दन टाइम्स' आदि प्रकाशित होते है ।

अमेरिका में भी हिंदी की पत्रिकाओं में 'विभोम स्वर', 'विश्व हिंदी जगत', 'विश्व विवेक', 'विज्ञान प्रकाश', 'बाल जगत' आदि मुख्य है । जिनमें प्रवासी साहित्य की कड़ी को और भी अधिक मजबूत करने की प्रयास किया है और यह प्रयास लगातार जारी है । डॉ. कमल किशोर गोयनका जी ने न्यूयार्क के

सम्मलेन में प्रवासी साहित्य के प्रतिनिधि रूप का परिचय देने के लिए 'साक्षात्कार' पत्रिका का संपादन किया, जिसका वहां पर लोकर्पण हुआ । इसके उपरान्त 'शब्दयोग, राजभाषा, मंजूषा, बुलंद प्रभा आदि पत्रिकाओं के अंकों का संपादन किया ।

कनाडा में विश्व हिंदी परिषद्, हिंदी साहित्य परिषद्, सद्भावना हिंदी साहित्यिक संस्था, नागरी प्रचारिणी सभा जैसी संस्थाएं हिंदी भाषा के विकास और प्रचार–प्रसार में निरंतर कार्यरत है । यहाँ से 'चेतन', वसुधा' जैसी स्तरीय पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है ।"[6]

डॉ. कमल किशोर गोयनका जी ने सूरीनाम के विश्व हिंदी सम्मलेन में 'विश्व हिंदी रचना' के नाम से एक ग्रन्थ का संपादन किया जिसमें पहली बार हिंदी के प्रवासी साहित्य की एक झलक देने की कोशिश की । प्रवासी साहित्य और डॉ. कमल किशोर गोयनका जी का बहुत गहरा रिश्ता रहा है । उनके प्रयासों से ही कई पत्रिकाओं के प्रकाशन का दौर शुरू हुआ या कहें की प्रवासी साहित्य इस अध्याय को स्पष्ट करने तथा इसे स्वीकारने में उनका बहुत बड़ा योगदान है । हाल ही में उनसे हुई बातचीत में उन्होंने बताया कि वें छह बार मॉरिशस की धरती पर गए है, जिसमें उन्होंने प्रवासी साहित्य से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर बातचीत की, उनकी रचनाओं को हिंदी साहित्य में स्थान दिया । प्रवासी साहित्यकारों से विचार–विमर्श किया एवं उनके लिए भारत में भी एक मंच उपलब्ध कराने का भी प्रयास किया ।

भोपाल में आयोजित 10 वें विश्व हिंदी सम्मलेन में 'प्रवासी साहित्य जोहान्सबर्ग से आगे' विदेश मंत्रालय द्वारा प्रकाशित हुआ । इसमें डॉ. कमल किशोर गोयनका जी का आलेख प्रवासी साहित्य: एक सर्वेक्षण', ने प्रवासी साहित्य के संदर्भ में बहुत विस्तार से जानकारी दी है । पत्रिकाओं में कथा, कहानी, साक्षात्कार, शोध आलेख, पुस्तक समीक्षा आदि के तरह प्रवासी साहित्य पर महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाती है । इसके अलावा मध्यप्रदेश के भोपाल प्रवासी भारतीयों की ई–मासिक पत्रिका 'गर्भनाल' का प्रकाशन किया जाता है । इस पत्रिका में दुनियाभर के हिंदी प्रेमियों के लिए रचनाएं प्रकाशित होती है । पत्रिका में हिंदी की दशा–दिशा के साथ–साथ प्रवासी भारतीयों पर आधारित या प्रवासी भारतीयों की रचनाओं को विशेष स्थान दिया जाता है । पत्रिका में मन की बात, डायरी, विचार–विमर्श, बातचीत, शोध आलेख, कहानी, हाइकू ऐसी विभिन्न विधाएं है ।

प्रवासी साहित्य एवं प्रवासी विशेषांकों का प्रकाशन

पत्र–पत्रिकाओं के अलावा प्रवासी साहित्य की अवधारणा को प्रस्तुत करने तथा इसकी लोकप्रियता व उनके साहित्य से परिचय कराने हेतु विभिन्न पत्रिकाएँ प्रवासी साहित्य पर विशेषांक भी प्रकाशित कराती रहती हैं । इस दिशा में 'वर्तमान साहित्य' ने प्रवासी महाविशेषांक निकालकर पहला कदम उठाया था ।[7] यह अंक अपने आप में विशिष्ट इसलिए था कि इसमें कई देशों के रचनाकारों के विभिन्न विधाओं में किये गए लेखन को न मात्र पहली बार एक मंच पर प्रस्तुत किया गया था वरन् उस लेखन की समीक्षा भी उपलब्ध थी । इसके बाद श्री तेजेंद्र शर्मा के अतिथि संपादकत्व में 'रचना समय' पत्रिका में प्रवासी कथा विशेषांक आया ।

अमेरिका के प्रतिनिधि हिंदी कथाकारों पर केन्द्रित 'शोध दिशा' का 'प्रवासी कथा विशेषांक' प्रकाशित हुआ ।"[8] इसके माध्यम से अमेरिका की हिंदी कहानी का एक अलग स्वरूप पाठकों के समक्ष आया । भारत में केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से प्रकाशित 'प्रवासी जगत' पत्रिका के भी प्रवासी साहित्य पर विशेषांक है, जिसमें प्रवासी भारतीयों के विभिन्न मुद्दों, उनके विचारों को रखा गया है । भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली से साहित्य, कला एवं संस्कृति के रूप में 'गगनांचल' का प्रकाशन किया जाता है । वर्ष 2017 में जनवरी–अप्रैल अंक संयुक्तांक रूप में गिरमिटिया एवं अन्य प्रवासी साहित्य विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया है ।"[9] इसके अलावा वर्ष 2023 में फिजी में आयोजित विश्व हिंदी सम्मलेन में विशेषांक प्रस्तुत किया, जिसमें विश्व के कोने–कोने में हिंदी की स्थिति एवं अन्य विधाओं को लिया है । 'प्रवासी कहानी विशेषांक', इग्लैंड का समकालीन हिंदी साहित्य, 'विजयेन्द्र स्नातक विशेषांक आदि विशेषांकों में माध्यम से भी प्रवासी साहित्य पाठकों के समक्ष आ रहा है ।

निष्कर्ष : प्रवासी साहित्य भारत और भारत के बाहर प्रकाशन के दौर में आने के बाद प्रवासी साहित्य और पत्रकारिता का के बीच संबंध और अधिक दृढ़ होता गया । पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन के बाद प्रवासी साहित्य दुनियाभर में उजागर होने लगा । प्रवासी भारतीयों के विभिन्न मुद्दों, विचारों, उनकी समस्याओं पर चर्चा–विमर्श होने लगे, तथा उनकी सुविधा हेतु भारत सरकार द्वारा गतिविधियाँ शुरू हुई । परिणामस्वरूप वर्तमान में भारत में प्रवासी साहित्य पर अध्ययन एवं अध्यापन का कार्य भी शुरू हुआ । साथ ही हिंदी सीखने के लिए भारत में आनेवाले प्रवासी भारतीयों तथा उनकी अगली पीढ़ी के लिए विशेष सुविधा देकर उन्हें हिंदी सीखने के लिए आर्थिक सहायता के साथ–साथ अन्य प्रोत्साहनपरक गतिविधियाँ भी

शुरू की गई । जिससे हिंदी साहित्य के साथ–साथ हिंदी प्रवासी साहित्य को भी लोकप्रियता मिलने लगी। आज प्रवासी भारतीयों की रचनाएं मूल भूमि पर प्रकशित पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ–साथ गंतव्य भूमि की पत्रिकाओं में स्थान पा रही है । उनकी रचनाओं के माध्यम से प्रवासी साहित्य की लोकप्रियता बढ़ रही है । प्रवासी साहित्यकार अपने देश के पत्र–पत्रिकाओं में साहित्य के माध्यम से जुड़ें हुए हैं तथा निरंतर प्रवासी हिंदी साहित्य के प्रति केन्द्रित प्रमुख पत्रिकाओं में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बहुवचन. अंक (अक्टूबर–दिसंबर 2019), पृ. 46.
2. बहुवचन, अंक (जुलाई–सितंबर 2018), पृ.106.
3. वहीं. पृ.107.
4. वहीं. पृ.107.
5. बहुवचन. अंक (अक्टूबर–दिसंबर 2019) पृ.65.
6. वहीं पृ. 228.
7. प्रवासी जगत. अंक (अप्रैल जून 2018) पृ.68
8. वहीं. पृ. 68
9. वहीं. पृ. 64